No. of Printed Pages : 5

MSK–005

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत)

(एम.एस.के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.एस.के.–005 : वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता

समय : 3 घण्टे अधिकतम अंक : 100

नोट : *प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।*

खण्ड–क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×10=50

(क) 'संस्कार' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए सोलह संस्कारों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

(ख) 'आश्रम' पद की व्युत्पत्ति स्पष्ट करते हुए उसके उद्भव एवं विकास तथा आश्रम व्यवस्था का महत्व स्पष्ट कीजिए।

(ग) प्राचीन भारत में 'नारी' पर विस्तारपूर्वक निबंध लिखिए।

(घ) प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली पर विस्तृत निबंध लिखिए।

(ङ) वैदिक यज्ञ मीमांसा पर विस्तृत निबंध लिखिए।

(च) शिक्षा ग्रंथों का वर्णन करते हुए वेदांग की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।

(छ) वैदिक साहित्य के संदर्भ में 'वाक्' के स्वरूप का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

खण्ड–ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** मंत्रों की व्याख्या कीजिए : 2×5=10

(क) यो जात एव प्रथमो मनस्वादेवो देवान् कृतुना पर्यभूषत्।

यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः।।

(ख) यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च

यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।

यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे

मनः शिवसङ्कल्पस्तु।।

(ग) मया सो अन्नमति यो विपश्यति चः

प्रणिति यईशृणो त्युक्तम्।।

अमन्तवो माँ त उप क्षियन्ति।

श्रुधिश्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।

(घ) ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।

उरु तदस्य यद्वैश्य पदभ्यां शूद्रो अजायत्।।

खण्ड–ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

5×6=30

(क) वैदिक देवता का स्वरूप

(ख) शब्दनित्यत्वानित्यत्वविचार

(ग) षड्भाव विकार

(घ) निरुक्त का प्रयोजन

(ङ) निपातों के विभाग

(च) निघण्टु

(छ) सविता देवता का वर्णन

4. निम्नलिखित सूत्रों में से किन्हीं **दो** की व्याख्या कीजिए : 2×5=10

(क) प्लुतप्रगृह्याऽअचि नित्यम्

(ख) कालसमयवेलासु तुमुन्

(ग) पृथ्वादिभ्य इमन्त्वा

(घ) एति पररूपम्

(ङ) पञ्चम्याः परावध्यर्थे

(च) सृपिहरोः कसुन्

(छ) वर्णदृढादिभ्यां ष्यञ्च

× × × × × × ×